नवसंवत् की शुभकामना

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः, सम्मानेन वो हविषा जुहोमि।। -ऋग्वेद

हम सभी मनुष्यों के विचार समान हों, सब संगठित होकर रहें। सबके मन, चित्त तथा यज्ञकार्य (सत्कार्य) समान हों, सब मिल-जुलकर-एकरूप होकर रहें।

संवत् **2073** नववर्ष में हम सब सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धन एवं दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन में सतत् लगे रहें - मानव धर्म का पालन करते रहें। आद्यशक्ति हमें साहस, शक्ति, श्री, स्मृद्धि, शांति प्रदान करे।

- ओमप्रकाश वर्मा

अप्रैल-जून 2016
द्विमासिक पत्रिका
सत्यापित क्र. HAR HIN 04496/07/1/2007-T.C.

वर्ष-10 अंक-1
15 जून 2016

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा

परामर्शदाता : प्रान्त सेवाप्रमुख : श्री कृष्ण कुमार संघ कार्यालय, सोनीपत।
मो. 090342-83251

स्वामी : सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा।
अध्यक्ष : प्रो. डॉ. बुद्ध सिंह
सी-7, अशोक विहार, फेज़ 2, गुड़गांव-122001 & 099718-02274
& 0124-2201130, 92154-60716

सम्पादक एवं प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा
ई-230, अर्जुन गेट, करनाल-132001
& 0184-2255852, 2255874

पत्रिका प्रबन्धक :
ओम प्रकाश वर्मा, एम.ए.बी.एड.

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा का सम्पादन, लेखन व अन्य सब कार्य अवैतनिक हैं

सम्पादकीय : एक बार किशोर-तरुण [illegible] ने एक कहानी सुनाई - एक सेठ विदेश से मोटी धनराशि कमाकर लौटा। वह नगर में एक बड़ा सा प्लॉट खरीदकर अपने परिवार के साथ रहने के लिए कोठी बनवाने लगा। उस प्लॉट की बग़ल में 40-50 वर्ग गज़ के टुकड़े में एक झोंपड़ी में एक बहुत ही ग़रीब-कलान्त सा व्यक्ति मेहनत मज़दूरी करके अपना गुज़ारा चलाता था। उस झोंपड़ी के लिए सेठ ने उस ग़रीब को मुँह माँगी कीमत देने की पेशकश की, परन्तु उसने यह कहते हुए इंकार कर दिया, कि मेरे बाप-दादा की विरासत में मिली यह झोंपड़ी है, मैं इसे नहीं बेचूंगा। कोठी तैयार हो गई, परिवार उसमें रहने लगा। लोग मज़ाक करते हुए कहते थे- आलीशान कोठी के बग़ल में झोंपड़ी एक दाग़ है। सेठ और उसका परिवार उस ग़रीब को तंग करने के लिए उसे गालियां देते, उसकी झोंपड़ी पर ऊपर से गन्दगी फैंक देते, वह ग़रीब मन मसोस कर रह जाता। एक दिन एक महात्मा ने भिक्षा मांगने के लिए पहले कोठी का द्वार खट-खटाया, अन्दर से कर्कश आवाज़ आई, कौन है? महात्मा ने कहा, कुछ खाने को मिल जाए, उत्तर आया- मुफ़्तखोरे आ जाते हैं सवेरे-सवेरे। वे महात्मा झोंपड़ी के द्वार पर आ गए। परेशान मज़दूर ने बाहर झांककर, हाथ जोड़कर महात्मा से कहा- महाराज! अगर थोड़ी देर प्रतीक्षा करें तो इकट्ठे मिलकर भोजन कर लेंगे। महात्मा ने उसे देखकर कहा- बेटा तेरी आयु तो अधिक नहीं लगती, परन्तु तू बहुत अधिक कमज़ोर व परेशान दिखाई दे रहा है, क्या बात है? उस दुःखी व्यक्ति ने अपनी व्यथा-कथा सुना दी- कि पास की कोठी का सेठ, उसे बहुत तंग करता रहता है। महात्मा ने उस ग़रीब का नाम पूछा- उसने कहा, महाराज परसू। महात्मा ने अपनी गुदड़ी में से कुछ पैसे निकाले, उसे देकर कहा- परसू बेटा! खाना खाकर बाज़ार से एक कस्सी और

एक बाल्टी लोटा खरीदकर ले आ, आज शाम तक अपनी यह झोंपड़ी गिरा दे। कल प्रातःकाल से इस ज़मीन को खोदना शुरू कर दे, जितनी खोद सके उतनी खोदकर पानी का छिड़काव कर दे, प्रतिदिन ऐसा करते रहो, आगे प्रभु का आशीर्वाद। यह कहकर महात्मा जी तो चल दिये और परसू एक श्रद्धालु शिष्य की भाँति बाज़ार से कस्सी बालटी लोटा ख़रीदकर ले आया, झोंपड़ी गिरा दी, दूसरे दिन से खुदाई और छिड़काव करना शुरू कर दिया। दो दिन बाद उस रास्ते से मोहल्ले का एक मनचला नौजवान गुज़रा, उसने परसू को कस्सी चलाते हुए देखकर पूछा- ओए परसू! यह क्या कर रहा है? 'देख नहीं रहा, खुदाई कर रहा हूँ,' परसू ने कहा। दो दिन बाद, वह नौजवान भी प्रातःकाल आकर परसू की सहायता करने लगा। सेठ ने भी देखा, उसने परसू का मज़ाक उड़ाते हुए कहा- 'ओए परसू! यहाँ सरकण्डे बोएगा?' परसू चुपचाप कस्सी चलाता रहा। एक सप्ताह गुज़रते-गुज़रते वहाँ मोहल्ले के 5-6 नौजवानों ने मिलकर उसे अखाड़े का रूप दे दिया। और एक सप्ताह गुज़रा, वहाँ 7-8 नौजवान डण्ड-बैठक पेलने लगे, कुछ कुश्ती भी करने लगे। वे सभी नौजवान अब परसू को 'परसू भाई' कहने लगे। मोहल्ले के लोग परसू को 'परसा भाई' कहने लगे। सेठ भी एक दिन उधर से गुज़रा, उसने भी कहा- 'ओ परसे! तूने तो यहाँ रंग जमा दिया।' कुछ दिन और गुज़रे पहलवानों की संख्या भी बढ़ने लगी, कुछ जवान सायंकाल को भी कुश्ती लड़ने आने लगे। अब सेठ का व्यवहार भी बदलने लगा। एक दिन सेठ ने कहा- 'परसे! मेरी डेयरी में बहुत दूध रहता है, 5-6 किलो दूध मंगवा लियो, इन पहलवानों को पिलाया कर।' परसू के तथा अन्य पहलवानों के डौले-शौले दिखाई देने लगे थे। एक दिन फिर सेठ उधर से गुज़रा, उसने आवाज़ लगाई 'परसूराम! अपनी घाणी का सरसों के तेल का एक कनस्तर लाया हूं, इससे सभी मालिश किया करो।' मोहल्ले में भी परसू श्री परसूराम जी हो गया। मोहल्ले की गुण्डागर्दी भी लगभग समाप्त प्रायः थी- एक किशोर स्वयंसेवक बीच में बोल पड़ा, 'अत्रेजा जी! यह तो हमारी शाखा की कहानी है, हमारे मुख्यशिक्षक भी मोहल्ले में जिधर से भी गुज़रते हैं, सब लोग हाथ जोड़कर नमस्ते करते हैं'- बिल्कुल ठीक, मैंने कहा, संघ की ही यह शाखा है। संघ शाखा में आकर ही संघ को कोई समझ सकता है। हमारे विरोधी अपनी-अपनी कुटिल भावनाओं के आधार पर हमारा विश्लेषण करते रहते हैं। परन्तु उनकी वाणी से एक बात जाने-अनजाने सच निकल जाती है, जब भी कहीं कोई सभा, धरना, जलूस

निकलता है, लोग 'भारत माता की जय' बोलते हैं, 'वन्दे मातरम्' बोलते हैं, तो विरोधियों की एक ही प्रतिक्रिया होती है, यह संघ वाले हैं, यानि देशभक्ति की जहाँ भी बात होगी, तो वहाँ संघ वाले ही होंगे, ऐसी धारणा बन गई है। हम संघ के स्वयंसेवक प्रतिदिन यही तो प्रभु से प्रार्थना करते हैं-

विजेत्री च नः संहता कार्यशक्तिर् विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्। परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं समर्था भवत्वशिषा ते भृषम्।। भारत माता की जय!

अर्थात्- 'तेरे आशीर्वाद से हमारी विजयशालिनी संगठित कार्यशक्ति स्वधर्म का रक्षण कर, अपने राष्ट्र को परमवैभव की स्थिति पर ले जाने में पूर्णतः समर्थ हो। भारत माता की जय!' वास्तव में संघ ऐसे लोगों का संगठन है जो यह समझकर चलते हैं यह भारत हमारी मातृभूमि है, यह हमें सबसे प्यारी है, यह विश्व में सबसे न्यारी है, इसके लिए जिएंगे और इसके लिए मरना पड़े तो मरेंगे भी।

संघ की यह संघ शाखा किसने, क्यों, कब और कैसे शुरू की : संघ के संस्थापक डाक्टर केशव बलिराम हेडगेवार संघ के प्रथम अर्थात् आद्य सरसंघचालक थे। डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में एक घंटे की दैनिक मिलन की एक अभिनव प्रणाली अपने राष्ट्र को दी। कुछ वर्ष पूर्व संघ शिक्षा वर्ग (O.T.C.) में आर्य समाजी एक विद्वान युवक O.T.C. में शिक्षार्थी बनकर आया, मैं उसमें प्रबन्धक था, मैंने उस युवक से O.T.C. के बारे पूछा, यह O.T.C वर्ग आपके विचार में कैसा लगा? तो उसने उत्तर दिया, 'आज के आधुनिक युग में यह संघ शाखा आधुनिक गुरुकुल का एक नवीन रूप है, यह O.T.C. तो है ही गुरुकुल।'

केशव का जन्म 1 अप्रैल सन् 1889 के दिन हुआ। उस दिन विक्रमी संवत् 1946 की वर्ष प्रतिपदा थी। उनकी माता का नाम रेवती था। केशव जन्मजात देशभक्त थे। हमारे देश में ऐसे अनेक महापुरुष हुए जिनकी प्रतिभा जन्म से दिखाई देती थी, वे थोड़ी आयु जीकर अपने राष्ट्र के लिए अद्भुत कार्य करके चले गए। उनमें आदि शंकराचार्य 39 वर्ष की आयु में ही अपने राष्ट्र का कल्याण कर स्वर्ग सिधार गए। इसी प्रकार शिवाजी महाराज 50 वर्ष, स्वामी विवेकानन्द 39 वर्ष, श्री गुरुगोबिन्द सिंह महाराज और स्वामी दयानन्द 60 वर्ष इसी कड़ी में डॉ. हेडगेवार की भी गिनती होती है। केशव हेडगेवार ने नेशनल मैडीकल कॉलेज कोलकत्ता से डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त की, परन्तु डॉक्टरी नहीं की। उन दिनों कोलकत्ता क्रान्तिकारियों का गढ़ था, वहाँ वह क्रान्तिकारियों के विश्वस्त मण्डल के सदस्य थे। वहाँ उनकी भेंट सुभाषचन्द्र

बोस से भी हुई। डॉ. बनकर जब वह नागपुर लौटे तो उनकी भेंट लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक से हुई, इस प्रकार वह कांग्रेस के नेता बने। जन-जन में देशभक्ति की अलख जगाने के लिए गाँव-गाँव में सभाएं करने लगे। अंग्रेज़ सरकार ने उनके भाषणों से चिढ़कर उन्हें कारावास में डाल दिया। 12 जुलाई, 1922 को कारावास से मुक्त होकर लौटे। इस समय देश में गाँधी जी का असहयोग और स्वदेशी का आन्दोलन चल रहा था। डॉ. जी ने स्वयं को इसमें झोंक दिया, किन्तु मुसलमानों के सम्बन्ध में गाँधी जी की नीति डॉक्टर जी को मान्य नहीं थी। उन्होंने गाँधी जी से भेंटकर कहा- जब हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, यहूदी आदि देश में रहते हैं तो अलग से हिन्दू-मुसलमान की एकता की बात समझ नहीं आती, गाँधी जी उन्हें सन्तुष्ट नहीं कर सके, परन्तु तब भी वह कांग्रेस में काम करते रहे। आखिर मुसलमानों की चापलूसी करने की कांग्रेस नीति के कटुफल देखकर डॉक्टर हेडगेवार के मन में एक नया विचार चक्र प्रारम्भ हुआ।

डॉक्टर जी ने संघ की स्थापना सन् 1925 में विजयदशमी पर की। प्रथम नागपुर, उसके बाद अड़ोस-पड़ोस के स्थानों पर संघ की शाखाएं शुरू हुई। सन् 1930 में डॉक्टर जी ने जंगल-सत्याग्रह में भाग लिया, उन्हें इस कारण एक वर्ष की सज़ा हुई, उन्हें अकोला (विदर्भ) कारागार में रखा गया। वहाँ डाक्टर जी का अनेक देशभक्त नेताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध बना। कारागार से मुक्त होने पर संघ की शाखाएँ सम्पूर्ण विदर्भ में प्रारम्भ हुई, उसके पश्चात् क्रम महाराष्ट्र का आया। 1936 के पश्चात् अन्य प्रान्तों में कार्यकर्त्ताओं को भेजना प्रारम्भ हुआ। 1940 तक लगभग सभी प्रान्तों में संघ शाखाएँ प्रारम्भ हो गयी थीं। 9 जून, 1940 को नागपुर के संघ शिक्षा वर्ग के दीक्षान्त समारोह में डॉक्टर जी ने कहा था, 'आज अपने सम्मुख मैं हिन्दू राष्ट्र का लघु रूप देख रहा हूँ।' डॉक्टर जी के जीवनकाल में ही संघ देशव्यापी संगठन हो गया था। डॉ. साहब उस समय असाध्य रोग ग्रस्त थे, 21 जून, 1940 को डॉक्टर जी का नागपुर में निधन हुआ। इससे पहले सुभाषचन्द्र बोस डॉ. साहब को मिलने आये थे, परन्तु डॉ. साहब की बीमारी के कारण उन दोनों महापुरुषों की भेंट नहीं हो पाई। उस समय उनकी आयु केवल 51 वर्ष थी, परन्तु वे भारत को संघ के रूप में ऐसा कल्पवृक्ष देकर गए, जिसकी छाया में हज़ारों संघ शाखाएँ कामधेनु के रूप में फल-फूल रही हैं, जिसमें लाखों स्वयंसेवक स्वदेश हित सर्वोपरि का संस्कार लेकर हिन्दू समाज में समरसता की गंगा अविरल बहा रहे

हैं। इस समय संघ विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन है। प्रतिदिन संघ स्थान पर संघ कार्य को ईश्वरीय कार्य समझकर प्रार्थना करते हैं-

प्रभोशक्तिमन् हिन्दुराष्ट्रांगभूता इमे सादरं त्वां नमामो वयम्।
त्वदीयाय कार्याय बद्धाकटीयं शुभामाशिषं देहि तत्पूर्तये।

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! हम हिन्दू राष्ट्र के अंगभूत घटक, तुझे आदर पूर्वक प्रणाम करते हैं। तेरे ही कार्य के लिए हमने कमर कसी है। उसकी पूर्ति के लिए हमें शुभ आशीर्वाद दें।

वर्ष प्रतिपदा-जन्मदिवस पर शत्-शत् प्रणाम

जो चले सतत हो सेवा-रत, ले जन्म भूमि का सेवा व्रत,
जिससे जन-जन जीवन जागृत, मृत जाति आज पा रही अमृत,
जिससे पाकर पौरुष प्रकाम, उन चरणों में अनुदिन प्रणाम।
जिसका जीवन संकल्प धवल, नव जीवन का संकल्प नवल,
धधका प्राणों में बना अनल, संगठित बने बिखरा स्वदेश,
निर्बलता पा जाये विराम, उन चरणों में निशि-दिन प्रणाम।
हिमगिरी सा उन्नत उच्च भाल, गौरव-गर्वित स्वर शब्द-माल,
देता है नव जीवन उछाल, वह नाम सभी के अधरों पर,
है गूंज रहा बन भक्ति-नाम, उन चरणों में शत्-शत् प्रणाम। -सोहनलाल द्विवेदी

केशव! तुमको शत्-शत् प्रणाम् -श्याम नारायण पाण्डेय

तुम आदमी या देवता, यह कैसे चले पता, आदमी की मूर्ति में देवत्व का आभास,
देवता की देह में हो आदमी का वास, तो उसे क्या कहे पुकारें, आरती कैसे उतारें?
ओ संघ शक्ति के भक्ति धाम! तुम अग्नि-मित्र जाज्वल्यमान,
जन-जन-अन्तः के अमृत-गान, तुम शिवि, दधीचि की यादगार,
हे परशुराम के स्वाभिमान, ओ कर्णधार शत्-शत् प्रणाम। केशव! तुमको शत्-शत् प्रणाम्

'मेरे इष्ट देव डाक्टर जी, एक अत्युच्च आदर्श बन चुके थे, ऐसे महापुरुष के चरणों में जो नतमस्तक हो सकता, वह संसार में कुछ नहीं कर सकता। उनमें माँ का वात्सल्य, पिता का उत्तरदायित्व तथा गुरू की शिक्षा का समन्वय था। यदि मैं कहूं कि वह मेरे इष्ट देव थे, तो इसमें किंचित भी अतिश्योक्ति न होगी। डाक्टर जी की पूजा व्यक्ति पूजा नहीं हो सकती। यदि इसे कोई पूजा समझे तो मुझे इसमें अभिमान ही होगा'।
-श्रीगुरू जी

महाभारत का श्लोक "अहिंसा परमो धर्मः" हम अधूरा क्यों पढ़ते है? जबकि पूर्ण श्लोक **"अहिंसा परमो धर्मः, धर्म हिंसा तदैव चः"** है।
अर्थात् - 'अहिंसा मनुष्य का परम् धर्म है और धर्म की रक्षा के लिये हिंसा करना उससे भी श्रेष्ठ है'।

मन की साधना ही सबसे बड़ी साधना है।

मन एवं मनुष्याणां कारणम् बांध मोक्ष्योः। बंधाय विषयासक्त मुक्त निर्विषय स्मृतम्।।

अर्थात्- 'मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। विषयासक्त मन बंधन के लिए और निर्विषय मन मुक्त माना जाता है'।

मैं इस बात को एक किम्वदन्ती के माध्यम से बताता हूँ। हमारे यहाँ कल्पवृक्ष की महत्ता से सभी परिचित होंगे, यह स्वर्ग में होता है और जो माँगो वही देता है। एक बार नारद जी अपने एक शिष्य को लेकर पृथ्वी से स्वर्ग लोक पहुँचे। वहाँ वह उसे एक कल्पवृक्ष के नीचे बैठाकर कहीं अन्यत्र चले गए। वह आदमी थक गया था, सोचने लगा कि कोई मेरे पैर दबा देता। विचार आया, ठीक वैसे ही अप्सराएँ वहाँ उपस्थित हो गयीं और उसकी सेवा करने लगीं। वह तो गद्-गद् हो उठा। कहा- स्वर्ग में कितना सुख है, दूसरे ही क्षण एक विचार आया, कि कहीं मेरी पत्नी इस दृश्य को देख ले तो लड़ाई शुरू हो जायेगी। इतना सोचते ही उसी क्षण उसकी पत्नी हाथ में झाड़ू लिए वहाँ उपस्थित हो गयी और उसकी पिटाई करना शुरू कर दी। आगे-आगे वह और पीछे-पीछे झाड़ूधारिणी पत्नी। नारद जी तुरंत वहाँ पहुँचे और बोले, मूर्ख सोचना ही था तो अच्छी बात सोचते। कल्पवृक्ष से तो जो माँगो वही देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं। मन ही सारी क्रियाओं का नियामक है। जिसने अपने मन को साध लिया, वह पूरी दुनिया को जीत सकता है। अगर आप साधन हीन हैं, या शारीरिक रूप से कमज़ोर हैं, तो भी अपने मन में श्रेष्ठ भाव आने दीजिये, क्योंकि कंचन बनने के लिए बहुत सारी जटिलताओं से गुज़रना पड़ता है। इसके साथ ही विपरीत परिस्थितियों में ही व्यक्ति के साहस और विवेक की परीक्षा होती है।

वह पथ और पथिक की कुशलता क्या? जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।

नाविक की धैर्य परीक्षा क्या? जब धाराएं प्रतिकूल न हों।।

आत्मविश्वास के द्वारा ही आदमी निर्णय लेने में समर्थ होता है, आत्मविश्वास मनुष्य की सम्पूर्ण शक्तियों को संगठित करता है। चित्त की एकाग्रता प्रबल होने पर मनुष्य की प्रसुप्त शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं। *आप के पास जो शक्तियाँ हैं, उन पर विश्वास करना और उसका सही उपयोग करना ही सफलता का मूल मन्त्र* है। यदि मन में दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव होगा तो व्यक्ति को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त नहीं होगी। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है- *"संशयात्मा विनश्यति"* जिसके मन में संशय होता है उसका

विनाश हो जाता है। सम्भवतः इसीलिए उन्होंने उपदेश दिया, कि मनुष्य को प्रत्येक कार्य दृढ़ संकल्प के साथ करना चाहिए, तभी सफलता प्राप्त होगी। यही जिन्दगी का अकाट्य सत्य है। इतिहास में अनेकों घटनाएँ दर्ज हैं जब अनेकों लोगों ने अपने आत्मविश्वास के बल पर जीत दर्ज की विश्वविजेता नेपोलियन, जर्मन प्रधानमंत्री विस्मार्क तथा वर्तमान युग में मिसाइलमैन पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम इनके सशक्त उदाहरण हैं। आत्मविश्वास के विकास में परिवार और समाज की महती भूमिका है। यह पाया गया है जिन बालकों के माँ बाप तथा शिक्षकों द्वारा प्रशंसा की जाती है, उनके अंदर आत्मविश्वास कूट-कूट कर भर जाता है, किन्तु जो माँ बाप बच्चों को हमेशा उलाहना देते हैं, उनका आत्मविश्वास चकनाचूर हो जाता है। यदि अपने ऊपर विश्वास है तो असंभव कुछ भी नहीं, लेकिन कर्म के प्रति ईमानदार होना चाहिए। मानव दूसरे से भले ही कुछ छुपा ले किन्तु अपने आप से कुछ नहीं छिपा सकता। अगर आप अपनी असफलताओं का विश्लेषण करें तो सब कुछ आप के सामने होगा। जिन्दगी एक जंग है जिसे संघर्ष से जीता जा सकता है। हर छोटी असफलता, सफलता का बड़ा द्वार खोलती है। जैसे खिलाड़ी मैदान में कभी जीतता है और कभी हारता है, ठीक वैसे ही हमें खेल भावना को अपने जीवन में आत्मसात् कर लेना चाहिए। चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न हों व्यक्ति को डरे बिना कर्म करते रहना चाहिए। **-सुभाष देशवाल**

श्रुतायुद्ध ने भगवान शिव की तपस्या करके उनसे ऐसी गदा प्राप्त कर ली थी, जिसका प्रहार त्रिलोक में किसी के लिए सह पाना सम्भव नहीं था। गदा देते समय भगवान शिव ने श्रुतायुद्ध को आगाह किया था कि गदा का उपयोग मात्र सत्कार्यों में किया जा सकता है, यदि व्यक्तिगत राग-द्वेष स्वार्थ की पूर्ति के लिए इसका उपयोग हुआ तो यही गदा उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। महाभारत के युद्ध में श्रुतायुद्ध को अर्जुन के सामने लड़ने आना पड़ा। भगवान कृष्ण को श्रुतायुद्ध की गदा के विषय में ज्ञान था, वे जानते थे, कि यदि वह गदा चली तो अर्जुन उस प्रहार को झेल न सकेगा। भगवान श्रीकृष्ण श्रुतायुद्ध को देखकर हँस पड़े। श्रुतायुद्ध को लगा, कि संभवतया भगवान कृष्ण, उसे कुरूप समझकर उस पर हँस रहे हैं। क्रोध में वह अपना संयम खो बैठा और भगवान शिव की चेतावनी भूल गया। उसने वह गदा भगवान कृष्ण को लक्ष्य कर फैंकी, परन्तु गदा ने लौटकर श्रुतायुद्ध का ही वध कर दिया। ऐसी शक्तियों का उपयोग विवेकसम्मत तरीके से ही किया जाना चाहिए, अन्यथा दंड का भागी स्वयं को ही बनना पड़ता है। ❑❑❑❑

विश्वास से मन स्थिर और दृढ़ होता है।

विश्वास मन को स्थिर और दृढ़ करने की विधि है। विश्वास के विपरीत जितने भी तत्त्व हैं, वे सभी मन को अस्थिर और कमज़ोर करते हैं। संशय, संदेह, भय, भ्रम-मन में जितने बढ़ेंगे, मन उतना ही चंचल और दुर्बल होगा। विश्वास का केंद्र जैसा है, मन की स्थिरता और दृढ़ता भी वैसी ही होगी। विश्वास यदि सामान्यजन के प्रति है, तो मन की स्थिरता और दृढ़ता भी सामान्य होगी। विश्वास यदि सद्गुरु के प्रति है, जीवन व जगत के परम् तत्त्व परमात्मा के प्रति है, तो मन की स्थिरता व दृढ़ता भी चरम और परम हो जाती है। विश्वास का चुंबकत्व अपने आप ही प्रकृति से मनोवांछित तत्त्वों को खींच लेता है। परमेश्वर अपने विश्वासीजन का दायित्व स्वयं उठाते हैं। संत पुरंदरदास कहते थे- वही साज-सँवार रखता है, वही फ़िक्र करता है, हम क्यों चिंता करें? तो दिन भर में उन्हें जो मिलता था, उसे वे साँझ को बाँट देते थे। उनका कहना था कि बचाने का मतलब होता है- परमात्मा पर अविश्वास, कि क्या भरोसा, वह कल देगा कि नहीं देगा? बचाने का मतलब होता है- होशियारी से काम लो, पता नहीं परमात्मा है भी या नहीं? इसलिए वे रात को भिखारी होकर सो जाते थे। उनके हर दिन का यही नियम था। जब वे मरने के करीब आए और चिकित्सकों ने कह दिया, कि अब बचेंगे नहीं, तो उनकी पत्नी ने सोचा कि आज की रात खतरनाक है, क्या पता दवा की ज़रूरत पड़े, वैद्य को बुलाना पड़े, यह सोचकर उसने उस साँझ पाँच चाँदी के रुपये बचाकर रख लिए। जब रात थोड़ी गहरी हुई, तो पुरंदरदास की बेचैनी बढ़ने लगी। वे सो नहीं पा रहे थे। ऐसा लगा कि जैसे उनकी साँस अटक गई हो। पहले ऐसा उनके साथ कभी नहीं हुआ था। उन्होंने पत्नी को अपने पास बुलाकर पूछा - "आज तुमने कुछ बचाया तो नहीं है? आज मेरे और परमात्मा के बीच कुछ बाधा मालूम हो रही है। लगता है कि मेरे प्रभुप्रेम में ईश्वरविश्वास में दरार आ गई है।" उनकी पत्नी बहुत घबरा गई। उसने झट से कह दिया- "आज मैंने पाँच रुपये बचा लिए हैं।" संत पुरंदरदास बोले- "भला यह कैसा विश्वास हुआ, जो भरी दुपहरी देता है, वह आधी रात को क्यों नहीं देगा? तुम बाहर जाकर देखो, एक भिखारी खड़ा है, उसे ये रुपये दे दो।" उनकी पत्नी ने बाहर निकलकर देखा तो सचमुच वहाँ एक भिखारी खड़ा था। पत्नी ने उसे रुपये दे दिए। अंदर आकर देखा कि पुरंददास को भी नींद आ गई थी। अब उनके और प्रभु के बीच कोई बाधा नहीं थी।

नमस्ते जी! अभिवादन अति उत्तम

हिन्दू मान्यता के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में एक परमात्मा ही था। उसमें एक स्फुरण हुआ- 'एकोऽहं बहुस्याम' अर्थात् एक हूँ अनेक बन जाऊँ। इस संकल्प के परिणामस्वरूप सृष्टि की रचना हुई और प्रभु की प्रेरणा से ही मानव परिवार का निर्माण भी हुआ, जिसे आज हम हिन्दू परिवार व्यवस्था कहते हैं। परिवार से समुदाय बनाना, उसमें मेल-जोल बढ़ाना, उन्नत संस्कारों से युक्त उत्तम व्यक्तियों का निर्माण करना, सब चराचर जगत के साथ आपसी सहयोग से आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करना, जिससे उत्तम कुटुम्ब में पालन पोषण होने पर व्यक्ति-व्यक्ति में आपसी स्नेह, सहयोग, विश्वास आदि सद्गुणों का संवर्धन होता है। एक समय था जब भारत वर्ष में वेदानुसार कुटुम्ब व्यवस्था थी, तो हमारा देश आर्यवर्त तथा विश्व गुरू था। आज भी पाश्चात्य जगत के अनेक लोग भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए हमारे भारत में आते रहते हैं। इसी कड़ी में एक अंग्रेज़ युवती भारत में भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने के लिए आई। हिन्दी भाषा और थोड़ा संस्कृत का ज्ञान उसे पहले से ही था संयोगवश उसे एक भारतीय संस्कृति के संस्कारों से ओत-प्रोत धार्मिक पारिवार में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उसी परिवार में उसके समवयस्क एक युवती भी थी। उसके साथ उसकी अच्छी मित्रता हो गई। उस परिवार में अन्य भी कई प्राणी थे। प्रातः उठने पर सभी एक दूसरे का अभिवादन करने पर नमस्ते बोलते थे। कहीं भी यह दोनों युवतियाँ जाती थीं, तो रास्ते में जानकार मिलते, तो भारतीय युवती उनका अभिवादन नमस्ते कहकर करती थी। एक दिन इंग्लिश युवती ने भारतीय युवती से पूछ ही लिया, कि भारत में लोग एक दूसरे को मिलने पर नमस्ते कहते हैं, कृपया यह बतायें कि इसका अर्थ और भाव क्या है? भारतीय युवती ने उत्तर दिया-"नमस्ते का अर्थ है-हम झुकते हैं, आपका आदर करते हैं। जब किसी को श्रद्धा, भक्ति व प्रेम से अभिवादन करना होता है, तो मधुर शब्दों में कहा जाता है- नमस्ते जी! ऐसा कहते समय श्रद्धा से दोनों हाथ भी जोड़े जाते हैं। हाथ हृदय के पास रखे जाते हैं, प्रेम और श्रद्धा से सिर भी झुकाया जाता है। इसका रहस्य यह है, कि इस प्रकार आदर सहित नमस्ते करने वाला व्यक्ति दूसरे को आश्वासन देता है कि ऐ मेरे साथी, मेरे मित्र, मेरे भाई, मेरे बन्धु! मैं अपनी वाणी से, अपना हाथ, हृदय व सिर झुकाकर आपका आदर करता हूँ। मेरे शरीर के यह चारों अंग जीवन में आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।" इंग्लिश युवती तुरन्त बोल उठी- "बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर, मैंने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि नमस्ते में इतना

गहरा रहस्य छुपा हुआ है। यह अभिवादन का ढंग संसार में अति उत्तम है।" भारतीय युवती ने कहा- "मानव-जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व है। संस्कार, सदाचार और सद्विचार ही मानव को सही अर्थों में मानव कहलाने का अधिकरी बनाते हैं। शास्त्र-परम्परा के अनुसार सम्यक् रूप से किया गया कर्म संस्कार कहलाता है। हम भारतीय अपने मित्र बन्धुओं को उनकी आयु और गुणों के अनुसार नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत् प्रणाम इत्यादि करते हैं, इसीलिए भारतीय संस्कृति में अभिवादन को संस्कारों का जनक कहा जाता है। अभिवादनशीलता मानव मात्र का सर्वोच्च सात्विक संस्कार है। वास्तव में मनुष्य जन्म तो, पशु के सामान ही है, वह संस्कार ही हैं, जो मानव को सही अर्थों में मानव बनाते हैं। अभिवादन हमारी संस्कृति का प्रथम पादान है, जिसमें विनम्रता, श्रद्धा, शील, सेवा, शरणागति और अनन्यता का भाव स्वतः समाहित है। अभिवादन के बल पर मानव-जीवन में अनेकों दिव्य लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं।" **अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेवन**- अर्थात् वृद्धजनों, गुरुजनों और माता-पिता को अभिवादन करने तथा उनकी नित्य सेवा से आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है। अभिवादनशीलता व्यक्ति के लिए कल्पवृक्ष के समान है, जिसकी प्रत्येक टहनी सद्गुण-फलाच्छादित होकर भावी महान् व्यक्ति में विनम्रभाव से आशीर्वाद के रूप में प्रकट होता है। यही अभिवादनशीलता हमारे व्यक्तित्व और चरित्र को महान् बनाती है। यह सब सुनकर इंग्लिश युवती भाव विभोर हो गई और बोली-"मित्र! भारत आकर तुम मुझे न मिली होती तो भारतीय संस्कृति का मेरा ज्ञान अधूरा रह गया होता।"

-शान्ति प्रकाश शर्मा

जीते जी रक्तदान - मरणोपरान्त नेत्रदान

मरने के बाद नेक कार्य ज़रूर करते जाइए, दो अमूल्य मोती दान करते जाइये / इन्हें न जलाएं न खाक में मिलाएं, बेशकीमती मोतियों को दान करते जाइये / ये चिराग़ जलते रहें इन्हें न बुझाइए, मरने के बाद नेक काम ज़रूर करते जाइए / नैननहीन जिन्दगी है ठोकरें ही ठोकरें, प्रकाशहीन जीवन वह कैसे भोग लें? बेकार उनकी ज़िन्दगी साकार करते जाईए, मरने के बाद नेक काम ज़रूर करते जाइए / सूनी भयानक रात लगे चाँद के बिना, बेनूर उनका चेहरा लगे आँख के बिना, उजड़े चमन में दीप जलाते जाईए, मरने के बाद नेक काम ज़रूर करते जाईए / मौत से है बद्तर आँखों का अन्धेरा, मुद्दत से काली रात मिटे हो फिर से सवेरा / ऐसे मजबूर के भगवान बनते जाईए, मरने के बाद नेक काम ज़रूर करते जाईए।

-भोजा राम मैहता, ऐलनाबाद

हर चुनौती करे हँस के स्वीकार जो, है जवानी वही,
ज़िन्दगी को न समझे कभी भार जो, है जवानी वही।

शक्ति से हैं भरी स्वस्थ नस-नाड़ियाँ, राह को रोक सकती न दुश्वारियाँ,
तुम चलो तीर-से सनसनाते हुए, अपनी शक्ति-संकल्प से पग बढ़ाते हुए,
चीरकर बढ़ सके वक्त की धार जो, है जवानी वही।
हर चुनौती करे हँस के स्वीकार जो, है जवानी वही।

हार से क्यों तुम्हें अब निराशा हुई, क्यों अविश्वास से पूर्ण भाषा हुई,
आत्मविश्वास अपना जगा लो ज़रा, वक्त की माँग को देखो-भालो ज़रा,
पतझरों से न माने कभी हार जो, है जवानी वही।
हर चुनौती करे हँस के स्वीकार जो, है जवानी वही।

है जवानी मिली लोकहित के लिए, स्नेह से हों भरे प्रज्ज्वलित सब दीए,
दीप-से-दीप सबके जलाते चलो, हर दिशा हर डगर जगमगाते चलो,
काट दे हर तरफ़ घोर अँधियार जो, है जवानी वही।
हर चुनौती करे हँस के स्वीकार जो, है जवानी वही।

इस समय चाल का रुख़ बदल दो ज़रा, लक्ष्य को देख, उस ओर चल दो ज़रा।
राह में रोक पाएँ न छाहें तुम्हें, हर समय देखती हैं वक्त की निगाहें तुम्हें,
दृष्टि में रख सके पूर्ण संसार जो, है जवानी वही।
हर चुनौती करे हँस के स्वीकार जो, है जवानी वही।

हर तरफ अब चुनौती भरा है समय, है अनाचार, आतंक, अन्याय, भय,
श्रेष्ठताएँ मनुज की व्यथित हो रहीं, आसुरी वृत्तियाँ जो गठित हो रहीं,
संगठित होकर करे उनका प्रतिकार जो, है जवानी वही।
हर चुनौती करे हँस के स्वीकार जो, है जवानी वही।

-शचीन्द्र भटनागर

सौम्यं नाम नववर्षं सर्वेभ्यः मंगलमंत्र भूयात।
दुर्वृत्तिभ्यो विरति भवन सामरस्यं जनेषु, स्वर्गाद्रम्ये,
जननि-धरणी नो सदा सेवनीय। संवर्धन्तामिति
सुरगुणा भारती बान्धवेषु, सौम्ये वर्षे सकल भुवने भारतं भारतं
स्यात्।।

सौम्य नामक नवसंवत्सर में मनुष्यों के सभी दुर्गुण दूर हों, मनुष्यों में परस्पर समरसता का भाव हो। स्वर्ग से सुन्दर अपनी माँ तथा भारत माँ की हम सदा सेवा करें। सभी भारतीय बन्धुओं में दैवी गुणों की वृद्धि हो तथा सम्पूर्ण विश्व में भारत माता की जय-जयकार हो।

योग रहस्य

-साभार परोपकारी

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूत् विजानतः।
तत्र कः मोह कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।। -यजु. 40-7

शब्दार्थ :- 'जिस ज्ञानी के ज्ञान में सभी प्राणी परमात्मा हो गए, ऐसे एकत्व दर्शी व्यक्ति को किस का मोह और किस का शोक रहेगा, अर्थात् वहाँ न मोह रहता है, न ही शोक रहता है।' यह असम्प्रज्ञात समाधि अवस्था का चित्रण खींचा गया है, जहाँ योग-युक्त आत्मा को सर्वत्र एक ब्रह्म ही नज़र आता है। असम्प्रज्ञात समाधि में आत्मा रूप को भी विस्मृत कर सर्वत्र एक विभु आत्मा का ही दर्शन करता है। इस अवस्था को पाने के लिये जिज्ञासु जनों के लिये हम एक क्रम का दिग्दर्शन कराते हैं।

1- योग परिभाषा - 'योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। योगः समाधि।' अर्थात् चित्तवृत्तियों का निरोध कहें या समाधि कहें, वह योग ही है।

2- समाधि प्राप्ति का फल- (क) इससे साधक का मन पूर्णतया निर्मल, स्थितप्रज्ञता को प्राप्त होता है। **(ख)** सब कषायों का क्षय हो जाता है। **(ग)** व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है। **(घ)** व्यक्ति को अपार आनंद की अनुभूति होती है। **(ड.)** मन और इन्द्रियों पर पूर्ण संयम हो जाता है। **(च)** सुन्दर स्वास्थ्य और कुशाग्र बुद्धि प्राप्त होती है। **(छ)** प्रसुप्त शक्तियाँ जाग्रत होती हैं। **(ज)** आत्म साक्षात्कार और प्रभु के दर्शन होते हैं। **(झ)** मृत्यु विजय की उपलब्धि होती है।

समाधि प्राप्ति के लिये प्रक्रिया :- 1- वर्तमान में जीना सीखें। अतीत की स्मृतियों में और भविष्य की कल्पनाओं में समय न खोवें।

2- जो भी कर्म करें, पूरे मनोयोग से करें। सब काम धर्मानुसार ही करें।

3- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने के लिये सदैव तैयार रहें।

4- शुद्ध सात्विक आहार और मित भाषण करें।

5- सज्जनों से मैत्री और दुर्जनों से उपेक्षा का भाव रखें।

6- यम-नियमों का नियमित पालन करें। उससे मन स्वच्छ और स्वस्थ होगा।

7- योगासनों का नित्य अभ्यास करें, इससे शरीर स्वस्थ निरोग बनेगा। ध्यान के समय स्थिर आसन पर बैठें, जिस पर दो घंटे तक स्थिर बैठ सकें।

8- प्राणायाम - स्थिर आसन पर बैठ कर प्राणायाम का अभ्यास करें। लम्बे और गहरे श्वास-प्रश्वास का अभ्यास करें। प्राणायाम से मन को एकाग्रता मिलती है। शरीर को अरोग्यता प्राप्त होती है।

9- प्रणव ध्वनि - लम्बा गहरा श्वास अन्दर लेकर ऊँचे स्वर से ओड्.कार का नाद करें। इस क्रिया को **9** से **11** बार दोहराएँ।

प्रणव ध्वनि के लाभ - **1-** आस्तिक भावना की दृढ़ता होती है। **2-** इष्ट की स्मृति होती है। **3-** तनावों से मुक्ति मिलती है। **4-** रोगों का शमन होता है। **5-** आनन्द की अनुभूति होती है। **6-** मन की एकाग्रता बढ़ती है। **7-** बुद्धि की शुद्धि होती है। **8-** प्राणशक्ति प्राप्त होती है। **9-** स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है। **10-** नाद से उत्पन्न प्रकम्पनों से भीतरी अवयवों की मालिश होकर वे स्वास्थ्य लाभ करते हैं। **11-** सूक्ष्म उत्तकों तक भी रक्त का संचार सहज गति से होने लगता है।

प्रणव ध्वनि करते समय अन्दर-बाहर शुक्लवर्ग के परिचक्र की भावना करें।

10- मन की एकाग्रता को पाने के उपाय - **1-** मन की स्थिरता या एकाग्रता के लिये शरीर की स्थिरता अनिवार्य है। शरीर से जैसे वस्त्र को निकाल अलग कर देते हैं, वैसे ही मन से शरीर को पृथक देखें। शरीर के थकान रहित, शान्त, स्वस्थ होने की भावना करें।

2- फिर शरीर के नाड़ीतन्त्र पर ध्यान लगायें। सुषुम्ना के निचले छोर से लेकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्त्रसार तक ध्यान करें, इससे... शेष अगले अंक में।

सेवा भारती, यमुनानगर

27 अप्रैल 2016 को सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त 20 छात्राओं को प्रमाण-पत्र वितरण श्री हनुमान मन्दिर रामपुरा में 6 माह कोर्स पूरा होने पर किये गये। इनरव्हील क्लब की प्रधान श्रीमती रमनीत कौर जी ने मुख्यातिथि के रूप में प्रमाण-पत्र छात्राओं को वितरण किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री घनश्याम जी जिन्दल ने की। संचालन श्री नवीन त्यागी नगर सचिव ने किया। मुख्यातिथि ने सिलाई कढ़ाई केन्द्र की छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से परिवार व समाज का आर्थिक स्तर सुधरता है। परिवार में अच्छे संस्कार पैदा होते हैं। श्री योगध्यान थरेजा नगर संरक्षक ने रामपुरा मन्दिर की प्रबन्धक कमेटी का विशेष तौर पर धन्यवाद किया। हमारा सिलाई केन्द्र मन्दिर में चलाने में सहयोग दिया हम उनके हमेशा ऋणी रहेंगे। बाल संस्कार केन्द्र ग्राम गधौली के बच्चों ने गायत्री-मन्त्र, स्वागत गीत, देश भक्ति गीत सुनाकर दर्शकों का मन मोह लिया। श्री योग ध्यान थरेजा जी ने जिन बच्चों ने गीत सुनाये उनको अपनी तरफ से पाँच सूट भेंट किये। कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती सुनीता त्यागी ने सेवा भारती द्वारा संचालित

प्रकल्पों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर सर्वश्री एम.के. पुरी, मनमोहन वर्मा, रुची महाजन सदस्य C.W.C., नवीन गौतम, मेहरा नाँगिया, एम.पी. बख्शी, प्रदीप गुलाटी मन्दिर कमेटी के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

-नवीन गौतम, प्रचार प्रमुख

सेवा भारती, फ़रीदाबाद का वार्षिकोत्सव

दौलतखान धर्मशाला, एन.आई.टी. में सेवा बस्तियों के लगभग 400 बच्चों एवं नगर के गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रमेश गुप्ता, निश्छल समाजसेवी अध्यक्ष गोपाल गौशाला, फरीदाबाद एवं जाने माने उद्योगपति तथा विशिष्ट अतिथि मा. प्रभुदयाल जी भाटिया, एन.आई.टी. क्षेत्र के स्वतःस्फूर्त समाजसेवी रहे। इसके अतिरिक्त ज़िलाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता लाडवा (हिसार) वाले मा. जिला संघचालक अरविन्द जी सूद, सेवा भारती के प्रान्ताध्यक्ष श्री बुद्धसिंह जी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सेवा कार्य में लगे वशिष्ठ कार्यकर्त्ताओं एवं प्रकल्पों की अध्यापिकायों को शाल एवं रामचरित मानस, श्री मद्भगवतगीता की प्रतियाँ देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में सेवा बस्तियों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की सुन्दर प्रस्तुतियों विशेषतः दहेज प्रथा-अभिशाप पर लघु नाटिका, भारत माता की आरती इत्यादि को सभी ने सराहा। मार्गदर्शन श्री बुद्धसिंह जी द्वारा सेवा भारती के उद्देश्य एवं वर्तमान में चल रहे प्रकल्पों तथा सभी बन्धुओं व सहयोग के आह्वान के साथ किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सेवा भारती एवं सेवा विभाग के सभी कार्यकर्त्ताओं ने प्राणपण से मेहनत की। कार्यक्रम का समापन वन्दे मातरम् गान के साथ हुआ।

भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती 13-4-16 एवं 14-4-16 को फरीदाबाद के 9 सेवा प्रकल्पों में मनाई गई। कार्यकर्त्ताओं द्वारा अम्बेडकर जी के जीवन पर प्रकाश डाला, विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने अपनी मेहनत एवं दृढ़ निश्चय के बल पर समाज में अपना स्थान बनाया एवं विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया, विशेषतः संविधान सभा की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा सामाजिक गीतों की प्रस्तुति भी दी गई।

-शिव कुमार, फरीदाबाद

सेवा भारती कार्यकर्त्ता बन्धुओं से निवेदन है कि अपनी सेवा गतिविधियों के समाचार, चित्र तुरन्त सम्पादक के पते पर भेज दिया करें।-सम्पादक

आपकी पाती -

1. 'सेवा दर्शन' का फरवरी-मार्च अंक बहुत ही सुन्दर, जिसे देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपका सम्पादकीय-'वीर सावरकर का स्मरण' स्फूर्तिदायक व प्रेरणादायक रहा। श्री ललित गर्ग जी लेख सारगर्भित है। हमारे देश में न पहले किसी चीज़ की कमी थी न अब है और न भविष्य में रहेगी, कमी है तो सदियों से पनपती हुई हीनभावना और पाश्चात्य का अन्धानुकरण का त्याग, जिसके चलते हम अपनी परम्पराओं, संस्कृति, उद्देश्यों व मौलिकता को खोते जा रहे हैं। यही कारण है कि पाँच हज़ार वर्षों से अधिक की पुरानी अपनी पहचान को स्वयं भी भूलने में गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। पाश्चात्य की तरह हम असामाजिक, असहिष्णु, असहयोगी होते जा रहे हैं। बची-खुची कसर हमारी आधुनिकता, मोबाईल फोन, इंटरनेट, कम्पयूटर व पाश्चात्य संगीत, नृत्य व मदिरा सेवन ने कर दी है। जी. न्यूज़ टी. वी. चैनल इस विषय पर काफी ज़ोर दे रहा है, कि हम इन आधुनिक साधनों का उपयोग आवश्यकता के अनुरूप करें। परिणाम यह है कि हम स्वयं ही एकाकी होते जा रहे हैं तथा सम्बन्धों, रिश्तों व बड़ों को सम्मान देने की मौलिक परम्परा को भूल रहे हैं। नई पीढ़ी तो माँ-बाप के रिश्ते को भूलकर मॉम-डैड, अंकल-आँटी में उलझकर रह गई, इसलिए आज भ्रष्टाचार, अनाचार व अन्य करूर अपराधों में अल्प आयु व अधेड़ उमर के लोग अधिक दिखाई देते हैं। इन सब का एक ही तोड़ है, कि हम अपनी पुरानी परम्पराओं, गुरुकुल शिक्षा एवं गुरु-शिष्य सम्बन्धों की ओर लौटें। अपनी कृषि, नीम, पीपल, बरगद की छाँव व कुएँ का पानी तथा चौपाल की संस्कृति को पुर्नजीवित करें।

-जे. सी. सिंघल, सिरसा

2. परिषद् विज्ञापन :- "हिन्दी को आने दो, अंग्रेज़ी को जाने दो।"
मान्यवर अत्रेजा जी, जयभारत, जय भारती, आपकी पत्रिका सेवा दर्शन मिल जाती है तदर्थ हार्दिक धन्यवाद। परिषद् की ओर से सम्प्रति प्रकाशन छोटा ही सही किन्तु एक सुखद परिणाम लाने वाला सफल प्रयास है। मधुर स्मृति सहित तदर्थ साधुवाद।

-अनम कुमार

3. आपकी पत्रिका सेवा दर्शन प्राप्त हुई। पढ़ कर बड़ा आनन्द हुआ। तीन पत्रिका पहले भी आपने भेजी थी वह मैंने पढ़कर कार्यकर्त्ताओं को दे दी थी। इस पत्र के साथ देहली में सेवा भारती की एक मासिक पत्रिका निकलती है, उसका नाम 'सेवा समर्पण' है। वह मैं आपको भेज रहा हूँ। आपकी भेजी

पत्रिका में एक लेख 'वीर सावरकर' पढ़ा, पहले भी जानकारी तो थी लेकिन एक नई जानकारी मिली, उसको पढ़कर अच्छा लगा। मैं हरियाणा में जीन्द का रहने वाला हूँ। गाँव से जीन्द में 1948 को आया था। 1949 में संघ का स्वयंसेवक बना, तब से लेकर 2002 तक हरियाणा में काम किया, 2002 में देहली आ गया। भिन्न-2 ज़िम्मेवारियाँ रहीं, 33 साल संघचालक का दायित्व रहा। जीन्द में हमने 1980 में सबसे पहले सेवा भारती का काम शुरू किया। बाकी बातें तो मिलने पर हो सकेंगी। पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद।

-रामकिशन गुप्ता रोहिणी, दिल्ली

4. सेवा दर्शन का फरवरी, मार्च-16 अंक मिला, सम्पादकीय पृष्ठों पर क्रान्तिकारियों के सरताज 'वीर सावरकर' पर लेख पढ़ा, आप वास्तव में बड़े ही भाग्यशाली हैं, जिन्होंने ऐसे महापुरुष के दर्शन किए हुए हैं। साठ वर्षों तक सत्ता भोगने वालों ने अंग्रेज़ों के साथ मिलकर अपने देश के इतिहास को विकृत कर दिया है। मैं आपकी पत्रिका के माध्यम से आधुनिक देशभक्त विद्वान इतिहासकारों से निवेदन करना चाहता हूँ कि वे अपने भारत वर्ष का सच्चे प्रेरणादायी इतिहास की खोज कर फिर से लिखें। वीर सावरकर का है कोई सानी?

● वीर सावरकर अकेले स्वतन्त्रता सेनानी थे जिन्हें बा-मुशक्कत दो जन्मों का कारावास मिला। ● प्रथम भारतीय राजनीतिज्ञ जिन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। ● वह ऐसे स्वतन्त्रता सेनानी थे, जिनके जीवन से प्रेरणा लेकर अनेक क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज़ों के घर में ही उनके सिंहासन को हिलाकर रख दिया था। ● प्रथम भारतीय विद्यार्थी, जिन्हें इंगलैण्ड के राजा के प्रति वफ़ादारी की शपथ न लेने पर वकालत की डिग्री देने पर रोक लगा दी गई थी। ● उनकी 1857 'स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम' पुस्तक को दो देशों ने प्रतिबंधित कर दिया था। ● इन्होंने तिरंगे में धर्मचक्र लगाने का सुझाव दिया, जिसे माना गया। ● राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का चिन्तन किया। बंदी जीवन के बाद अस्पृश्यता तथा सामाजिक सद्भाव के लिए आन्दोलन किया।

● अंडमान जेल की दीवारों पर कील और कोयले से कविताएँ लिखी, उन्हें याद किया और 10000 पंक्तियों को जेल से छूटने पर पुनः लिखा।

-ओमप्रकाश वर्मा

इन्सान बनें, साहब इन्सान बनें !

संगीत सुनकर ज्ञान नहीं मिलता, मंदिर जाकर भगवान नहीं मिलता।
पत्थर इसलिए पूजते हैं लोग, क्योंकि विश्वास के लायक इंसान नहीं मिलता।।

भगवत् कृपा का चमत्कार

भगवद् कृपा सब समय, सब जगह, सब पर समान रूप से बरसती रहती है, इसका अनुभव प्राप्त करने के लिए शुद्ध हृदय से प्रभु में अटल विश्वास, विनम्र भाव से लगातार प्रार्थना की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के दृढ़ विश्वास और निस्प्रह प्रार्थना की सहायता से यदि कोई भगवद् कृपा के सम्पर्क में आ जाए तो असम्भव दिखाई देने वाला कार्य भी सम्भव हो जाता है। अमेरिका में जैक्सन नाम के एक डॉक्टर ने कैंसर रोग को ठीक करने के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि पाई थी। एक संस्था ने डॉक्टर जैक्सन को उनके अभूतपूर्व खोज को सम्मानित करने के लिए निमंत्रित किया। समारोह में जाने के लिए डॉक्टर ने हवाई जहाज़ पकड़ा। किन्तु कुछ दूर जाकर हवाई जहाज़ खराब हो गया और यात्रियों को एक दूसरे हवाई अड्डे पर उतरना पड़ा। इस हवाई अड्डे से, अगले दस घंटों तक उस शहर के लिये जहाँ डॉक्टर जैक्सन को जाना था, कोई उड़ान नहीं थी। डॉक्टर जैक्सन ने एक कार किराये पर ली और स्वयं चलाकर अपने नियत स्थान की ओर जैसे ही चले कि तेज़ आंधी और बारिश आ गई, फिर भी वे चलते रहे। तेज़ बारिश व तूफ़ान के कारण वे ग़लत दिशा में भटक गये। थोड़ी दूर चलने के बाद तूफ़ान इतना तेज़ हो गया, कि एक स्थान पर उन्हें रुकना पड़ा। वे जिस घर के सामने रुके उसकी घंटी बजायी। एक महिला बाहर आई, उन्होंने अनुरोध किया कि तूफ़ान कम होने तक उन्हें वहाँ रुकने की अनुमति दे दें। महिला उन्हें अन्दर ले गई। घर में महिला व उसका बीमार बच्चा था। महिला ने डॉक्टर जैक्सन को एक कमरे में बैठाया, उन्हें चाय एवं बिस्किट दिये और कहा, "आप चाय पियें, मैं प्रार्थना पूरी करके पुनः आती हूँ।" कुछ देर बाद महिला प्रार्थना करके आयी और कहा, "मैं भगवान् ईशू की प्रार्थना में व्यस्त हूँ। आप चाहें तो मेरे साथ प्रार्थना कर सकते हैं या फिर यहीं आराम से जब तक चाहें बैठ सकते हैं।"

डॉक्टर नास्तिक था, उससे नहीं रहा गया और उन्होंने कहा, "क्या प्रार्थना जैसी चीज़ों से कुछ होता है ? इंसान को कार्य करना चाहिए। आप बार-बार प्रार्थना क्यों करती हैं?" महिला ने बताया, "मेरा बच्चा कैंसर से पीड़ित है और उसका इलाज सिर्फ़ एक ही डॉक्टर कर सकते हैं और वे हैं डॉक्टर जैक्सन, लेकिन मैं एक ग़रीब विधवा हूँ। मेरे पास न धन है और न ऐसी कोई पहुँच जिसके द्वारा मैं उस डॉक्टर के पास जाकर अपने बच्चे का इलाज करा सकूँ। मुझे केवल भगवद् प्रार्थना का ही सहारा है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि ईशू अवश्य ही कुछ सहायता करेंगे।" महिला की बात सुनते

ही डॉक्टर आश्चर्य चकित होकर सोचने लगा, "भगवान् ने मुझे यहाँ तक लाने के लिये हवाई जहाज खराब कर दिया, दूसरी उड़ान भी उपलब्ध नहीं होने दी और फिर ऐसी बारिश व तूफ़ान आया जिसने मुझे रास्ता ही भुला दिया और ठीक उसी स्थान पर रुकने को मज़बूर कर दिया जहाँ मेरी सख़्त ज़रूरत थी। वाह रे भगवान्!" उस दिन से डॉक्टर को विश्वास हो गया कि प्रार्थना सब कुछ कर सकती है। **-साभार स्वर्ण हंस**

पुण्य, शुद्ध भावना से किए कर्मों का प्रतिफल

आत्मा और परमात्मा के समक्ष तो भावना प्रधान है। जीवन के हर एक काम की अच्छाई-बुराई कर्त्ता की भावना के अनुरूप होती है। जीवन भले ही सादा हो, यदि विचार उच्च हैं तो जीवन भी उच्च माना ही जाएगा। रुपये-पैसे या काम के बड़े आडंबर से पुण्यफल का विशेष संबंध नहीं है। दुनिया की भौतिक चीज़ों की भाँति पुण्यफल रुपयों से नहीं ख़रीदा जा सकता। पुण्य का पैसे से कोई संबंध नहीं है। पुण्य तो भावना से अर्जित किया जाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में रुपये की तूती नहीं बोलती, वहाँ तो भावना की प्रधानता है। दंभ, अहंकार, नामवरी, वाहवाही, पूजा-प्रतिष्ठा के प्रदर्शन के लिए धर्म के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी उतना पुण्यफल नहीं मिल सकता, जितना कि श्रद्धा एवं सच्चे अंतःकरण से भूखे को एक रोटी खिला देने पर प्राप्त होता है। स्मरण रखिए - सोने की सुनहरी चमक और चाँदी की चमचमाहट आत्मा को ऊँचा उठाने में सहायक नहीं होती। आत्मिक क्षेत्र में ग़रीब और अमीर का दर्जा बिल्कुल बराबर है, वहाँ सबके पास समान वस्तु और साधन हैं। भावना हर ग़रीब-अमीर को प्राप्त है, उसी की अच्छाई-बुराई के ऊपर पुण्य-पाप का सारा दारोमदार है। सच्चे हृदय से किए हुए एक अत्यंत छोटे और तुच्छ दिखने वाले कार्य का जितना महत्त्व है, उतना दंभपूर्वक किए हुए बड़े भारी आयोजन का किसी प्रकार नहीं हो सकता। भावना की सच्चाई और सात्विकता के साथ आत्मत्याग और कर्त्तव्यपालन, यही धर्म का पैमाना है। इस भावना से प्रेरित होकर काम करना ही पुण्य है।

भोजन पानी करें ज़मीन पर अल्थी पल्थी मार,
चबा-चबा कर खाईये, वैद्य न झाँके द्वार।
सुबह फलों का जूस लो, दोपहर लस्सी या छास,
सदा रात में दूध पी, हो सभी रोगों का नाश।
भोजन कर के रात में, घूमें कदम हज़ार,
डॉक्टर, ओझा, वैद्य जी, सब लुट जाएँ बाज़ार। *-अज्ञात*

समालखा में सेवा भारती बाल विद्यालय

नए सत्र की मनाना रोड पर शुरूआत 16 अप्रैल, 2016 को हवन-यज्ञ के साथ की गई। मुख्यातिथि ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स के करनाल रीजन के डिप्टी जनरल मैनेजर सर्वश्री अशोक कुमार छाबड़ा, मनाना गाँव में बैंक मैनेजर सर्वश्री सतीश जैन, समालखा बैंक शाखा के प्रबंधक ललित कुमार नांगिया ने हवन में आहुति अर्पित की। बच्चों को स्कूल बैग, पुस्तकें, कॉपी, पेन, पेन्सिल आदि स्टेशनरी का सामान ओरिएण्टल बैंक ऑफ़ कॉमर्स, मनाना द्वारा वितरित किया गया। श्री अशोक कुमार छाबड़ा ने कहा कि शिक्षा के बिना जीवन में तरक्की करना संभव नहीं है। समाज में फैली समाजिक कुरीतियाँ को शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है। सेवा भारती समाज में वंचित लोगों को मुख्य धारा में जोड़ने का बहुत ही उत्तम कार्य कर रही है। उन्होंने प्रति वर्ष पाँच बच्चों के शिक्षा का खर्च वहन करने का और समय-समय पर हर प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन दिया। सेवा भारती अध्यक्ष आनंद कुमार शरण ने कहा कि बच्चे कोरी प्लेट की तरह होते हैं, हम उन्हें जिस आकार में ढालना चाहें उसी आकार में ढल जायेंगे। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री दयालू अरोड़ा ने किया। इस अवसर पर सेवा भारती पदाधिकारी सर्वश्री सुरेन्द्र शर्मा, मदन लाल, अविनाश शर्मा, सुभाष देशवाल, राजेन्द्र कुमार टंडन, जगदीश बेलवाल, डॉ. देवेन्द्र मल्होत्रा, पुरुषोत्तम दास अरोड़ा और स्कूल अध्यापिकाएँ मौजूद रहे। अंत में सभी ने सहभोज का आनंद लिया। **-सुभाष देशवाल,** समालखा

फतेहाबाद में नवसंवत्सर 2073 पर हवन-यज्ञ का आयोजन

सेवा बस्ती में 8 अप्रैल, 2016 को सेवा भारती टोहाना द्वारा संचालित सिलाई केन्द्र, इन्दिरा बस्ती में आयोजन किया गया। इसमें श्री सतीश मुंजाल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता मुंजाल एक अन्य दम्पत्ति के साथ यजमान के रूप में उपस्थित थे। यह आयोजन बस्ती के प्रमुख नागरिक श्री रामचन्द्र जी के निवास स्थल पर आयोजित हुआ। इस हवन-यज्ञ में उपस्थित सभी बस्ती वासियों तथा आगन्तुक महानुभावों ने आहुतियाँ डालीं। इस आयोजन में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. शिव सचदेवा ने नए संवत्सर सम्बन्धी घटनाओं का रोचक वर्णन किया। धर्मजागरण मंच की ओर से डॉ. रमेश जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस आयोजन में सेवा भारती के सभी सदस्यों सर्वश्री बाल कृष्ण भाटिया पूर्व प्रधान नगरपालिका टोहाना,

ओमप्रकाश अरोड़ा, हंसराज नागपाल अध्यक्ष सेवा भारती, टोहाना, सत्यप्रकाश शर्मा, प्रेम प्रकाश, मनफूल जी शर्मा, श्री छाबड़ा जी, श्री के.एल. रेल्हन, श्री रायचन्द जी जैन, श्री शशि भूषण गुप्ता एवं पंडित दर्शन जी हवन कराने के लिए सम्मिलित हुए। बस्ती वासी इस आयोजन से बहुत गद्‌गद् एवं हर्ष विभोर थे। **-रायचन्द जैन,** सचिव सेवा भारती, टोहाना

सेवा भारती, चरखी दादरी

1. 26-3-2016 को सिलाई केन्द्र की छात्राएँ कुरुक्षेत्र भ्रमण के लिए गई। जिनमें छात्राएँ एवं बच्चों की संख्या 30 थी। इनके साथ सहयोग के लिए दादरी नगर के सेवा भारती के नगराध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम दास, कोषाध्यक्ष श्री विजय गोयल, प्रकल्प प्रमुख श्री सुरेश मोरवाल, अध्यापिका श्रीमती मंजु मोरवाल, सेवा भारती के संरक्षक श्री राम अवतार जी गोयल व कुरुक्षेत्र में घुमाने वाले कुरुक्षेत्र ज़िला अध्यक्ष श्री सन्तलाल जी शर्मा साथ थे।
2. 19-3-2016 को हनुमान मन्दिर में सद्‌भावना-भाईचारा के लिए सेवा भारती द्वारा सभी बच्चों व सिलाई केन्द्र की बहिनें ने हवन-यज्ञ में भाग लिया एवं एकता का सन्देश दिया, जिसमें 57 संख्या रही। हवन में नगराध्यक्ष सर्वश्री पुरुषोत्तम जी, कोषाध्यक्ष विजय गोयल जी, सुरेश जी मोरवाल, भगत राम धानिया, राजेश पूर्व M.C., टोनी प्रधान, श्रीमती मंजू मोरवाल व श्रीमती सन्तोष आहुजा उपस्थित रही। **-गोपाल कृष्ण मुटरेजा**

निसिंग में बाल संस्कार केन्द्र का उद्‌घाटन

27 मई, 2016 को श्रीमती कान्ता जी ज़िला महिला प्रमुख करनाल के अथक प्रयास से निसिंग, करनाल में बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। केन्द्र खटीक गली, निकट बड़ा स्कूल में श्री उत्तम पंवार के घर में एक कमरे में खोला गया। श्री दिनेश चड्‌ढा, अधिवक्ता करनाल ने हवन-यज्ञ किया। यज्ञ की महिमा व मन्त्रों का अर्थ भी बताया। श्री शिव कुमार एवं श्रीमती किरण केन्द्र की अध्यापिका मुख्य यजमान रहे। हवन-यज्ञ की समाप्ति पर श्री सेवा राम जी खण्ड सेवा प्रमुख एवं महालक्ष्मी ट्रेडर्ज़, निसिंग ने लड्डुओं का प्रशाद बटवाया एवं सर्वश्री उत्तम कुमार पंवार, प्रवेश कुमार टिटोरिया, जगदीश जी, बहन विद्या देवी, श्री प्रवीन गुप्ता खण्ड कार्यवाह, श्री ताराचनद विद्यार्थी प्रचारक निसिंग खण्ड, करनाल बाल संस्कार केन्द्र की अध्यापिका श्रीमती

बेबी, बाल संस्कार केन्द्र के बच्चे व आस-पड़ोस की महिलाओं ने हवन-यज्ञ में भाग लिया। मैं स्वयं भी उपस्थित रहा। 'चनदन है इस देश की माटी' गीत भी गाया गया। दिनेश चड्ढा जी ने देशप्रेम व आपसी भाईचारे पर भी प्रकाश डाला। केन्द्र आरम्भ करने में श्री ओमप्रकाश वधवा, श्री रोशनलाल जांगड़ा जी का सहयोग रहा। हवन-यज्ञ की समाप्ति पर मैं श्री प्रवीन गुप्ता, श्री तारचन्द, बहन कान्ता जी, श्रीमती बेबी के साथ श्री रोशन लाल जांगड़ा जी के घर में गए। वहां उनकी बहु श्रीमती किरण से भेंट हुई जो टोहाना सेवा भारती केन्द्र से विवाह पूर्व सिलाई सीख चुकी हैं और उन्होंने निकट भविष्य में सेवा भारती की ओर से बाल संस्कार केन्द्र में अध्यापिका का दायित्व निभाने का आश्वासन दिया।

-हरिकृष्ण नारंग, ज़िला सचिव, करनाल

जोड़ो भारत जोड़ो रे, जोड़ो भारत जोड़ो रे।

ऊँच नीच का भेद मिटाओ, नफ़रत की दीवार हटाओ,
समरसता जीवन में लाओ, जाति-बंधन तोड़ो रे। जोड़ो भारत .....

माँ का आंचल न छू पाए, ग़ज़नी-ग़ौरी फिर आए,
उंगली कोई यदि उठाए, उसका हाथ मरोड़ो रे। जोड़ो भारत .....

बुरी नज़र से जिसने ताका, दामन मेरी भारत माँ का,
यदि कोई जो डाले डाका, उसकी आँखें फोड़ो रे। जोड़ो भारत .....

अपना सब कुछ भूल रहे हो, किस मद में तुम फूल रहे हो।
मस्ती में क्यों झूल रहे हो, दिशा देश की मोड़ो रे। जोड़ो भारत ...

स्वदेशी चीज़ें अपनाओ, और विदेशी दूर भगाओ,
अपना स्वाभिमान जगाओ, मोह-विदेशी छोड़ो रे। जोड़ो भारत .....

वैभवशाली भारत अपना, होगा इक दिन सच्चा सपना,
बढ़े चलो अब क्यों है रुकना? तनिक गति से दौड़ो रे। जोड़ो भारत..

हनुमान चालीसा पढ़कर, युद्ध करो तुम आगे बढ़कर,
दुश्मन की छाती पर चढ़कर, उसका रक्त निचोड़ो रे। जोड़ो भारत .....

जागो श्रमिक किसानों जागो, उद्यमी जाग जवानों जागो,
बाल वृद्ध नर नारी जागो, एक सौ तीस करोड़ों रे। जोड़ो भारत .....

अतंकियों से विश्व है आहत, पूरी होती उनकी चाहत,
राक्षसों को क्यों मिलती राहत, उनको मार निबेड़ो रे। जोड़ो भारत .....

-वीरेन्द्र दत्त आर्य नगर, फ़रीदाबाद

रजिस्ट्रार ऑफ़ न्यूज़पेपर (सैंट्रल) फ़ार्म-8 में निर्देशित द्विमासिक पत्रिका 'सेवा दर्शन से प्रभु पूजा' के स्वामित्व एवं अन्य नियमों से सम्बन्धित विवरण

1.	प्रकाशक	:	ओमप्रकाश अत्रेजा
	पता	:	ई-230, अर्जुन गेट, करनाल।
	क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
2.	प्रकाशन स्थान	:	अभिमन्यू व्यायामशाला, अर्जुन गेट, करनाल
3.	प्रकाशन अवधि	:	द्विमासिक
4.	मुद्रक का नाम	:	जुगल बठला, बठला प्रिंटर्ज,
	पता	:	विवेकानन्द, विद्यालय परिसर, करनाल
	क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
5.	सम्पादक का नाम	:	ओम प्रकाश अत्रेजा
	क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
	पता	:	ई-230, अर्जुन गेट, करनाल - 132001
	उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों।		सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा **अध्यक्ष :** डॉ. बुद्ध सिंह सी-7, अशोक विहार, फ़ेज़-2, महर्षि स्कूल के सामने, गुरूग्राम-122001

मैं, ओम प्रकाश अत्रेजा एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 15 मई, 2014 - **ओम प्रकाश अत्रेजा,** प्रकाशक

वेद :- 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म, यज्ञ हमारे जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। 'ईजानाः स्वर्गम् यनितलोकम्' यज्ञ द्वारा देवोपासना करने वाले लोग स्वर्ग-सुखमय लोक को प्राप्त होते हैं। **'यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः'** यज्ञ से अतिरिक्त जितने भी कर्म हैं, वे सब बन्धन के हेतु है। (यज्ञ में पहली देव पूजा, दूसरा सत्संग व स्वाध्याय तथा तीसरा दान-दक्षिणा आदि सम्मिलित हैं।) **'शतहस्त समाहर, सहस्र हस्त संकिर'** हे पुरुष! तू सौ हाथों वाला होकर कमा, पर हज़ार हाथों से उसे दान कर।

हे दयामय आप ही संसार के आधार हो, आप ही करतार हो सबके पालनहार हो।

जन्म दाता आप ही माता-पिता भगवान हो, सर्वसुख दाता सखा भ्राता हो तन मन प्राण हो।

आप के उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं, बिन कृपा सुख शान्ति का पार पा सकते नहीं।

दीजिए रहमत बनें हम सद्गुणी संसार में, मन हो मंजुल धर्म में और तन लगे उपकार में।

-ओमप्रकाश वर्मा

14वीं किस्त आपात्काल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष

सन् 1975 में श्रीमती इन्दिरा गांधी की आपात्काल की घोषणा से लगभग 28 वर्ष पूर्व अनगिनत बलिदानियों के तथा हज़ारों अन्य लोगों के अहिंसात्मक संघर्ष के कारण विदेशी अंग्रेज़ों के चुंगल से अपने देश को मुक्त कराकर देश की प्रजा ने देश में लोकतंत्र की व्यवस्था का संकल्प लिया था। 28 वर्षों तक एक ही परिवार की जनतन्त्र के लबादे में तानाशाही चलती रही। बीच में केवल डेढ़ वर्ष के लिए भारत के आकाश में एक सितारा-श्री लाल बहादुर शास्त्री के रूप में चमका था, परन्तु कहते हैं कि वह भी षड्यंत्रों का शिकार होकर रह गया। 1966 में जवाहर लाल नेहरू की लाडली बेटी की ताजपोशी हुई। उसकी 1975 में आपात्काल की तानाशाही से आज़ाद कराने के लिए हज़ारों, लाखों देशभक्तों ने श्री जयप्रकाश के नेतृत्व में संघर्ष किया। लगभग एक वर्ष नौ मास में (25 जून 1975 से 31 मार्च 1977 तक) सत्याग्रह करके जेल गये : 1,63,960, पुलिस द्वारा बन्दी बनाये गये : 44,963, मीसा में बन्दी बनाए गए : 23,075, बलिदान हुए : 107, पुलिस यातना के शिकार : 9506, इनमें से लगभग 85 प्रतिशत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता संग्राम के बाद स्वतन्त्र देश में 28 वर्ष बाद एक बार फिर से एक वंश की तानाशाही के विरुद्ध प्रजातन्त्र को फिर से बहाल करने का यह एक बड़ा संग्राम था। इस स्वतन्त्रता संग्राम में 14 जनवरी 1976 में हम तीन सत्याग्रहियों का नाम भी जुड़ गया। इसके अतिरिक्त हज़ारों स्वयंसेवकों ने भूमिगत रहकर इस भीषण संघर्ष में भाग लिया। उस दिन विधानसभा के गेट नं. 1 पर एक घण्टा तक नारे लगाते-लगाते हमारे गले बैठ गए थे। उस समय सचिवालय और विधानसभा भवन के सामने एक अद्भुत नज़ारा था। 20 से 25 हज़ार लोग हमारे सत्याग्रह के साक्षी बने। पुलिस हमें बन्दी बनाने के लिए नहीं आई। वहीं एक ऊँचे स्थान पर 5-6 मिनट का भाषण देकर मैंने घोषणाकी कि कल यानि 15 जनवरी को फिर से हम सत्याग्रह करेंगे। जैसे ही हम चलने लगे एक सी.आई.डी. सिख कांस्टेबल आ गया, उसने कहा- पुलिस आ रही है, तुम मत जाओ, हम फिर से नारे लगाने लगे, थोड़ी देर में पुलिस की एक जीप आई और हमें बन्दी बनाकर सैक्टर-17 के पुलिस थाने ले जाकर एक बन्दीग्रह में बन्द कर दिया।

उस समय सांयकाल के लगभग 5 बजे होंगे। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद हम नारे लगा रहे थे। उस थाने का एक पुलिस अधिकारी आया, उसने बड़ी सहानुभूति जताते हुए नारे न लगाने का अनुरोध किया। थोड़ी देर बाद श्री पुरुषोत्तम जी देशमुख (उस समय प्रदेश जनसंघ के महामन्त्री थे) पुलिस

अधिकारी की अनुमति से चाय लेकर आ गए। उन्होंने भी कहा, कि अगले दिन 15 जनवरी को कुछ स्वयंसेवकों कैदियों की ज़मानत होने वाली है, इसलिए नारे नहीं लगाएं, प्रशासन नाराज़ हो जाएगा और अड़चन आ सकती है। रात्रि लगभग 9 बजे टूटे-फूटे बर्तनों में साधारण दाल-फुल्का हमें परोसा गया। इससे निवृत होकर मैंने अपने दोनों साथियों से कहा, अब हमसे पूछताछ होगी। मैंने तो बहुत कुछ सुन रखा था, कि पुलिस हम जैसे कैदियों के साथ क्या व्यवहार करती है, इसलिए मैंने कहा कि मेरे अनुमान अनुसार अब हमें बुलाया जाएगा, अगर तो सबको इक्ट्ठे बुलाते हैं तो कोई भी प्रश्न पूछे तो उत्तर मैं ही दूंगा और अलग-अलग बुलाते हैं तो पहले गुलशन जी जाएंगे। वहां वे कुछ भी पूछें, सब बातों का एक ही उत्तर देना है- 'यह अत्रेजा जी जानते हैं, उनके कहने पर हम आए हैं।' उसके बाद राजेन्द्र जी जाएंगे, वह भी यही कहेंगे। मैं अन्त में जाऊँगा। थोड़ी देर बाद एक सिपाही आया, उसने फटे-पुराने चार कम्बल हमें दिये, उसमें से अजीब प्रकार की सड़ांध की बदबू आ रही थी। सिपाही ने कहा, आपमें से एक आ जाए, साहब बुला रहे हैं। योजनानुसार गुलशन जी चले गए। दस मिनट बाद वह सही सलामत लौट आए। इसी प्रकार राजेन्द्र जी भी लौटकर आ गए। अब बारी मेरी थी, मैं गया। एक कमरे में पांच कुर्सियों पर पांच अधिकारी बैठे थे। अलग से उन पांचों के आगे एक स्टूल रखा था, उस पर मुझे बैठने के लिए कहा गया। कमरे का द्वार बन्द कर दिया गया। उन पांचों में से तीन शुद्ध हरियाणवी में बात कर रहे थे। सबसे पहले मेरा पूरा परिचय पूछा गया। उनमें से एक अधिकारी को मैं जानता था, उसे मैंने आर्य समाज के कई जलसों में देखा था, उसका नाम शायद श्री किशन सिंह था, वह उस समय सी.आई.डी. में एस.पी. थे। परिचय के बाद उनमें से एक अधिकारी ने पूछा-हां भई छोरे! तैं इन दोनियों का लीडर सै। मैंने कहा नहीं जी, हम तो साथी हैं। प्रश्नों की सूची उन्होंने बना रखी थी, बारी-बारी पूछते जाते थे। मैं उन्हें गोल-मोल परन्तु सच्चे उत्तर देता था। डेढ़ घण्टे तक प्रश्न उत्तर चलते रहे। तब एक अधिकारी ने कहा- इसे तो बिछाना पड़ेगा। इस पर उस आर्य समाजी एस.पी. ने शायद मेरे बचाव में कहा- 2 बजने वाले हैं, इसे अब कल देखेंगे और मैं बच गया। वे पांचों उठकर चल दिये। उस दिन ज़बरदस्त सर्दी थी। अपनी कोठरी में आकर अपने साथियों के साथ उन फटे पुराने कम्बलों में दुबक गये। प्रातःकाल फिर से श्री देशमुख जी चाय लेकर आ गए।

शेष अगले अंक में...

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा द्विमासिक पत्रिका, स्वामित्व- सेवा भारती (पंजी.) हरियाणा।
मुद्रक : जुगल बठला, मै. बठला प्रिंटर्ज़, विवेकानन्द विद्यालय परिसर, करनाल।
सम्पादक व प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा, ई. 230, अर्जुन गेट, करनाल-132001